The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय ओटीटी सिनेमा का समाज में अपराध दरों पर प्रभाव

सचिन गोस्वामी

शोधार्थी ,स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एंड टेलीविजन स्टडीज, आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

प्रोनरेंद्र कुमार मिश्र .

प्रोफेसर ,स्कूल ऑफ मीडिया, फिल्म एंड टेलीविजन स्टडीज आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15857786

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

ओटीटी प्लेटफॉर्म, भारतीय सिनेमा, अपराध दर, मीडिया प्रभाव, सामाजिक शिक्षा, संवर्धन सिद्धांत, असंवेदनशीलता, साइबर अपराध, युवा, विनियमन

ABSTRACT

भारत में ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफ़ॉर्म के तेज़ी से प्रसार ने मनोरंजन परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिससे व्यापक जनसांख्यिकीय स्पेक्ट्रम में अपराध थ्रिलर और सामाजिक रूप से प्रासंगिक कथाओं सहित विविध सामग्री तक अभूतपूर्व पहुँच मिल रही है। यह अध्ययन मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और नियामक आयामों का विश्लेषण करते हुए भारतीय ओटीटी सिनेमा और अपराध दरों के बीच बहुआयामी संबंधों की आलोचनात्मक जाँच करता है। जबकि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुभवजन्य डेटा 2010 से 2022 तक समग्र अपराध दरों में सामान्य गिरावट का संकेत देते हैं, ओटीटी उपभोग में उछाल के बावजूद, साइबर अपराध में वृद्धि और मीडिया-प्रेरित अपराधों की छिटपुट घटनाओं के प्रमाण हैं। सामाजिक शिक्षण सिद्धांत, संवर्धन सिद्धांत और असंवेदनशीलता सिद्धांत जैसे सैद्धांतिक दृष्टिकोण बताते हैं कि अपराध-थीम वाले ओटीटी कंटेंट के लंबे समय तक संपर्क से धारणाएँ और व्यवहार प्रभावित हो सकते

हैं, विशेष रूप से युवाओं में, संभावित रूप से हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता और अपराध की व्यापकता के विकृत विचारों को बढ़ावा मिल सकता है। हालाँकि, ऐसे प्रभाव पैमाने में सीमित रहते हैं, जिसमें व्यापक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारक अपराध प्रवृत्तियों को आकार देने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शोध में ओटीटी सामग्री के दोहरे प्रभाव को रेखांकित किया गया है - सार्वजनिक जागरूकता और कानूनी साक्षरता में वृद्धि, साथ ही नैतिक असंवेदनशीलता और हिंसा के सामान्यीकरण के बारे में चिंताएं भी बढ़ रही हैं।

1. परिचय:

1.1 भारतीय ओटीटी सिनेमा का उदय: एक नया मनोरंजन प्रतिमान:

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म के तेजी से बढ़ते प्रसार ने भारत के मनोरंजन परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया है। ये प्लेटफॉर्म पारंपरिक केबल और सैटेलाइट टेलीविजन को दरकिनार करते हुए, सीधे इंटरनेट पर फिल्मों, टीवी शो और वेब सीरीज की एक विस्तृत और विविध लाइब्रेरी प्रदान करते हैं। यह परिवर्तन काफी हद तक इंटरनेट एक्सेस की व्यापक उपलब्धता, सस्ती डेटा योजनाओं और ऑन-डिमांड, व्यक्तिगत सामग्री अनुभवों की बढ़ती मांग से प्रेरित है।

भारत का ओटीटी बाजार वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ने वाला बाजार बन गया है। इसमें पर्याप्त राजस्व और लगातार बढ़ता ग्राहक आधार है। पारंपरिक, शेड्यूल्ड ब्रॉडकास्टिंग से ऑन-डिमांड, व्यक्तिगत ओटीटी उपभोग में यह बदलाव सिर्फ एक तकनीकी बदलाव नहीं है; यह दर्शकों और कंटेंट के बीच के संबंध को मौलिक रूप से फिर से परिभाषित करता है। इन प्लेटफॉर्म द्वारा प्रदान किया गया बढ़ा हुआ नियंत्रण और वैयक्तिकरण, साथ ही बिंज-वॉचिंग जैसी सुविधाएं, गहन तल्लीनता और निरंतर जुड़ाव की अनुमति देती हैं।

पारंपरिक टेलीविजन के विपरीत, जो निश्चित समय-सारिणी पर चलता है और विज्ञापनों को शामिल करता है, ओटीटी प्लेटफॉर्म विशिष्ट विषयों या कथाओं के लिए निरंतर, निर्बाध प्रदर्शन की सुविधा प्रदान करते हैं। यह दीर्घकालिक जुड़ाव मीडिया की दुनिया से ब्रेक को कम करके मीडिया के मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक प्रभावों को तीव्र कर सकता है। इसके अलावा, ओटीटी प्लेटफॉर्म द्वारा नियोजित वैयक्तिकृत अनुशंसा एल्गोरिदम दर्शकों को लगातार वही परोसते हैं जो वे पहले से ही देख चुके हैं, संभावित रूप से "इको चैंबर" बनाते हैं जो विशेष शैलियों या विषयों, जैसे अपराध के संपर्क को गहरा करते हैं। यह विकसित हो रहा उपभोग पैटर्न सामग्री प्रभावों के अध्ययन को पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण बना देता है, क्योंकि ओटीटी देखने की इमर्सिव प्रकृति इसके कथानक के प्रभाव को बढ़ा सकती है।

1.2 शोध प्रश्न और अध्ययन का महत्व:

भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपराध-थीम वाली कहानियों में उल्लेखनीय उछाल सहित विविध सामग्री के प्रसार ने अपराध दरों और व्यापक सामाजिक व्यवहार पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में एक महत्वपूर्ण बहस को जन्म दिया है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय ओटीटी सिनेमा और समाज के भीतर अपराध दरों के बीच जटिल और बहुआयामी संबंधों का पता लगाना है। यह प्रत्यक्ष कारण की सरल धारणाओं से आगे बढ़ने का प्रयास करता है, इसके बजाय इस अंतःक्रिया के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और नियामक आयामों का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन का महत्व भारत में तेजी से विकसित हो रहे मीडिया परिदृश्य को समझने में इसके योगदान में निहित है, विशेष रूप से सार्वजनिक सुरक्षा और सामाजिक कल्याण के लिए इसके निहितार्थ। मौजूदा अकादमिक शोध, आधिकारिक अपराध डेटा और विशेषज्ञों की राय को संश्लेषित करके, यह शोधपत्र इस बात पर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण प्रदान करेगा कि क्या और कैसे ओटीटी सामग्री अपराध को प्रभावित कर सकती है। यह व्यापक सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारकों पर भी विचार करेगा जो स्वाभाविक रूप से भारत में आपराधिक गतिविधि को आकार देते हैं, जो चल रही जटिल गतिशीलता का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

2. भारतीय ओटीटी सिनेमा का विकसित परिदृश्य:

2.1 भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म की परिभाषा और विशेषताएं:

ओटीटी, "ओवर-द-टॉप" का संक्षिप्त रूप है, जो केबल और सैटेलाइट टेलीविजन जैसे पारंपरिक वितरण चैनलों को दरकिनार करते हुए सीधे इंटरनेट पर वितरित मीडिया सेवाओं को संदर्भित करता है। ये प्लेटफॉर्म फिल्मों, टीवी शो और वेब सीरीज की एक विस्तृत लाइब्रेरी को ऑन-डिमांड देखने की सुविधा प्रदान करते हैं, जो उपभोक्ताओं को बेजोड़ सुविधा, किफायती, विविधता और वैयक्तिकरण प्रदान करते हैं।

भारतीय ओटीटी सिनेमा को परिभाषित करने वाली प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- **सामग्री विविधीकरण:** पारंपरिक बॉलीवुड में प्रचलित "एक आकार सभी के लिए उपयुक्त" दृष्टिकोण से एक उल्लेखनीय प्रस्थान, ओटीटी प्लेटफॉर्म ने कई शैलियों को अपनाया है, जिससे विशिष्ट और अपरंपरागत कहानियों की खोज संभव हुई है।
- **प्रयोग और जोखिम उठाना:** वर्जित विषयों, सामाजिक रूप से प्रासंगिक मुद्दों और प्रयोगात्मक कथाओं में तल्लीन होने की अधिक इच्छा है, जिसमें LGBTQ+ अधिकार, मानसिक स्वास्थ्य और लैंगिक समानता जैसे विषय शामिल हैं।
- **डायरेक्ट-टू-डिजिटल रिलीज:** अब बड़ी संख्या में फिल्में सीधे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर रिलीज की जा रही हैं, वैश्विक महामारी के कारण जब मूवी थिएटर बंद थे, तब इस प्रवृत्ति में काफी तेजी आई है।
- **क्षेत्रीय भाषा की सामग्री:** भारत की भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए, क्षेत्रीय भाषा की प्रोग्रामिंग ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए एक रणनीतिक प्राथमिकता बन गई है।
- **नई प्रतिभा और वैश्विक पहुंच:** ओटीटी प्लेटफॉर्म ने नई प्रतिभाओं के उभरने के लिए नए रास्ते बनाए हैं और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की सुविधा दी है, जिससे भारतीय सिनेमा की वैश्विक दर्शकों तक पहुंच का विस्तार हुआ है।

पारंपरिक सिनेमा के विपरीत, ओटीटी प्लेटफॉर्म पर "बोल्ड थीम और कथानक को तलाशने की यह अद्वितीय स्वतंत्रता" और "प्रयोग और जोखिम उठाने" में वृद्धि, अपराध सामग्री के लिए एक अनूठा वातावरण बनाती है। यह रचनात्मक स्वतंत्रता मुख्यधारा के मीडिया में आमतौर पर देखे जाने वाले चित्रणों की तुलना में अधिक ग्राफिक, हिंसक और नैतिक रूप से अस्पष्ट चित्रण की अनुमति देती है, वही स्वतंत्रता जो रचनात्मक आउटपुट को बढ़ावा देती है, वह एक शून्य भी बनाती है जहां सामग्री सेंसरशिप निकायों की पारंपरिक निगरानी के बिना सीमाओं को लांघ सकती है। यह संवेदनहीनता, हिंसा के सामान्यीकरण और युवाओं पर नकारात्मक प्रभावों की संभावना से संबंधित एक महत्वपूर्ण नैतिक दुविधा की ओर ले जाता है।

2.2 विकास, उपभोग पैटर्न और दर्शकों की जनसांख्यिकी:

डिजिटल क्रांति ने भारत में मनोरंजन उपभोग को गहराई से बदल दिया है, जिसमें ओटीटी सेवाएं तेजी से पारंपरिक मनोरंजन के साधनों की जगह ले रही हैं। भारत का ओटीटी बाजार 2027 तक 7 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जो इसे वैश्विक स्तर पर छठा सबसे बड़ा बाजार बनाता है। भारत में ग्राहक आधार 2021 में 45 मिलियन तक पहुंच गया, अनुमान है कि 2024 के अंत तक यह बढ़कर 50 मिलियन हो जाएगा।

भारतीय युवा डिजिटल सामग्री उपभोक्ताओं का एक महत्वपूर्ण और अत्यधिक व्यस्त जनसांख्यिकीय समूह है, जो साप्ताहिक रूप से ऑनलाइन वीडियो सामग्री देखने में औसतन 8 घंटे और 29 मिनट खर्च करते हैं, यह आंकड़ा वैश्विक औसत 6 घंटे और 45 मिनट से काफी ज्यादा है। यह जनसांख्यिकी, जिसे अक्सर डिजिटल मूल निवासी के रूप में जाना जाता है, वेब सीरीज और लघु फिल्मों जैसे लचीले, ऑन-डिमांड प्रारूपों के लिए एक मजबूत प्राथमिकता प्रदर्शित करती है। शोध यह भी संकेत देते हैं कि महिलाएं वेब स्ट्रीमिंग सामग्री में समान रुचि प्रदर्शित करती हैं।

भारतीय युवाओं में उच्च उपभोग दर और पारंपरिक टेलीविजन की तुलना में ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए उनकी विशिष्ट प्राथमिकता उन्हें संभावित मीडिया प्रभावों के लिए विशेष रूप से कमजोर जनसांख्यिकीय

बनाती है। किशोर और बच्चे अपने प्रारंभिक वर्षों में हैं और अवलोकन सीखने के लिए अतिसंवेदनशील हैं। नतीजतन, ओटीटी सामग्री में प्रचलित विषयों, विशेष रूप से हिंसा और नैतिक रूप से अस्पष्ट कथाओं के लंबे समय तक और गहन संपर्क, अपराध और आक्रामकता से संबंधित लोगों सहित उनकी विकासशील धारणाओं, दृष्टिकोणों और व्यवहारों को गहराई से और नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। यह चिंता केवल वे क्या देखते हैं से आगे बढ़कर उनके महत्वपूर्ण विकासात्मक चरणों में इसे कब देखते हैं, तक फैली हुई है।

2.3 विषयगत प्रभुत्व: अपराध थ्रिलर और उनके कथानक का प्रसार:

अपराध थ्रिलर भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सबसे लोकप्रिय शैलियों में से एक के रूप में उभरे हैं, जो लगातार शीर्ष 10 सबसे अधिक देखे जाने वाले कार्यक्रमों में शुमार हैं। कंटेंट क्रिएटर्स का सुझाव है कि ये शो दर्शकों को अपराध के दृश्यों में ले जाकर और उन्हें सुरक्षित, नियंत्रित वातावरण में अपराधियों और पुलिस प्रक्रियाओं के मनोविज्ञान का पता लगाने की अनुमति देकर आकर्षित करते हैं।

भारतीय ओटीटी वेब सीरीज में अक्सर खोजे जाने वाले प्रमुख विषयों में हिंसा, सेक्स, देशभक्ति, गुप्त मिशन, राजनीतिक नाटक, बेवफाई और हत्याएं शामिल हैं। सेक्रेड गेम्स, मिर्जापुर, शी और द फैमिली मैन जैसी सीरीज इन विषयगत चिंताओं का उदाहरण हैं। हिंसा का चित्रण ग्राफिक हो सकता है, अक्सर खुले घावों से खून बहने जैसे स्पष्ट खूनी दृश्यों को दर्शाता है। वास्तविक अपराध-आधारित शो के लिए प्रामाणिकता एक महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है, दिल्ली क्राइम सीजन 2 वास्तविक जीवन के अपराधों से जूझ रहे मानव पुलिस अधिकारियों के यथार्थवादी चित्रण के कारण दर्शकों के साथ दृढ़ता से जुड़ गया है। हालांकि, कुछ कंटेंट में हिंसा, यौन सामग्री, तंबाकू का उपयोग, नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अभद्र भाषा के चित्रण के लिए आलोचना की गई है।

भारतीय दर्शक तेजी से पारंपरिक टेलीविजन ट्रॉप्स से आगे बढ़ रहे हैं, सक्रिय रूप से अपराध थ्रिलर और सामाजिक रूप से प्रासंगिक कथाओं सहित विविध शैलियों की तलाश कर रहे हैं। क्षेत्रीय ओटीटी प्लेटफॉर्म भी स्थानीयकृत कहानी कहने पर ध्यान केंद्रित करके इस प्रवृत्ति में योगदान दे रहे हैं, जिसमें अपराध

कथाएं शामिल हैं, और अक्सर पहले से कम प्रतिनिधित्व वाली शैलियों की खोज कर रहे हैं। भारतीय ओटीटी अपराध थ्रिलर में "सच्चे अपराध" और "यथार्थवादी चित्रण" की लोकप्रियता, जबकि मानव स्वभाव के अंधेरे पहलुओं का पता लगाने के लिए "सुरक्षित वातावरण" की पेशकश करती है, विरोधाभासी रूप से असंवेदनशीलता और अपराध की विकृत धारणा में योगदान कर सकती है। यथार्थवादी हिंसा के बार-बार संपर्क में आने से, भले ही वह काल्पनिक हो, वास्तविक दुनिया की हिंसा के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया में कमी आ सकती है। इसके अलावा, अपराध पर लगातार ध्यान केंद्रित करना, चाहे वह कितना भी प्रामाणिक क्यों न हो, कल्टीवेशन थ्योरी के लेंस के माध्यम से, दर्शकों को यह विश्वास दिला सकता है कि अपराध वास्तविकता से कहीं अधिक प्रचलित है, जो "मतलबी दुनिया सिंड्रोम" को बढ़ावा देता है। यह प्रभाव केवल मनोरंजन से परे है, जो काल्पनिक चित्रण और वास्तविक सामाजिक स्थितियों के बीच की रेखाओं को धुंधला करके सामाजिक मानदंडों और चिंताओं को फिर से परिभाषित कर सकता है।

3. मीडिया प्रभाव और अपराध पर सैद्धांतिक दृष्टिकोण:

3.1 सामाजिक अधिगम सिद्धांत और अनुकरणात्मक व्यवहार:

सामाजिक अधिगम सिद्धांत, अल्बर्ट बंडुरा द्वारा विकसित, यह मानता है कि व्यक्ति अवलोकन और अनुकरण के माध्यम से व्यवहार प्राप्त करते हैं, विशेष रूप से मीडिया व्यक्तित्व जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों से। बच्चे और युवा मीडिया में देखे गए हिंसक व्यवहार की नकल करने के लिए विशेष रूप से अतिसंवेदनशील होते हैं, जैसा कि बंडुरा के क्लासिक बोबो डॉल प्रयोगों द्वारा प्रदर्शित किया गया था, जहां आक्रामक मॉडल अक्सर दोहराए जाते थे। इस तरह की नकल की संभावना और भी बढ़ जाती है यदि देखे गए मॉडल को उनके कार्यों के लिए पुरस्कृत किया जाता है, एक अवधारणा जिसे प्रतिनिधि सुदृढीकरण के रूप में जाना जाता है।

जब भारतीय ओटीटी अपराध सामग्री अपराधियों को "नैतिक अस्पष्टता" के साथ चित्रित करती है या यहां तक कि "अपराध का वीर चित्रण" प्रस्तुत करती है, तो यह अनजाने में आपराधिक व्यवहार के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण प्रदान कर सकती है, खासकर अगर ये पात्र अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं या

सफलतापूर्वक न्याय से बचते हैं। यह साधारण नकल से परे है; यह विचलित कृत्यों को वैध बनाने और नैतिक सीमाओं को धुंधला करने का जोखिम उठाता है, खासकर उन प्रभावशाली युवाओं के लिए जो इन पात्रों को रोल मॉडल के रूप में देख सकते हैं। कथात्मक ढांचा, जहां प्रतिपक्षी "नायक को मात दे सकते हैं" या अवैध साधनों के माध्यम से वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं, दर्शकों को आपराधिक व्यवहार को "प्रभुत्व स्थापित करने या समस्याओं को हल करने का प्रभावी तरीका" के रूप में देखने के लिए प्रेरित कर सकता है। इन पात्रों की नैतिक अस्पष्टता नैतिक निर्णय को और भी जटिल बनाती है, जो संभावित रूप से व्यक्तियों को अपने जीवन में इसी तरह के कार्यों को उचित ठहराने के लिए प्रेरित करती है। यह केवल हिंसा दिखाने से एक महत्वपूर्ण अंतर है; यह उस हिंसा के कथात्मक निर्माण और उसके कथित परिणामों से संबंधित है।

3.2 संवर्धन सिद्धांत:

"मतलबी दुनिया" की धारणाओं को आकार देना, जॉर्ज गेर्बनर का संवर्धन सिद्धांत बताता है कि मीडिया सामग्री के लंबे समय तक और भारी संपर्क से समय के साथ दर्शकों की वास्तविकता की धारणाएं व्यवस्थित रूप से आकार लेती हैं। जो व्यक्ति भारी मात्रा में टेलीविजन दर्शक होते हैं, वे दुनिया को वास्तविकता से कहीं अधिक खतरनाक और अपराध-ग्रस्त मानते हैं, जिसे "मतलबी दुनिया सिंड्रोम" कहा जाता है। यह प्रभाव अक्सर समाचार कार्यक्रमों की तुलना में काल्पनिक अपराध शो के लिए अधिक मजबूत देखा जाता है।

भारतीय ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपराध थ्रिलर के महत्वपूर्ण प्रचलन और विशेष रूप से युवाओं के बीच उच्च उपभोग दरों को देखते हुए, भारी दर्शकों में भय और अविश्वास की भावना विकसित हो सकती है, जिससे उन्हें यह विश्वास हो सकता है कि अपराध वास्तव में जितना है, उससे कहीं अधिक व्यापक है। इस विकृत धारणा के व्यापक सामाजिक निहितार्थ हो सकते हैं, जो संभावित रूप से सार्वजनिक नीति प्राथमिकताओं और आपराधिक न्याय में संसाधनों के आवंटन को प्रभावित कर सकते हैं। यह दंडात्मक उपायों की बढ़ती मांग में भी योगदान दे सकता है या सामान्य सामाजिक चिंता को बढ़ावा दे सकता है,

भले ही वास्तविक अपराध दर स्थिर रहे या घट रही हो। इसका प्रभाव व्यक्तिगत भय से आगे बढ़कर अपराध और न्याय के प्रति सामूहिक प्रतिक्रियाओं को आकार देता है।

3.3 असंवेदनशीलता और उत्तेजना सिद्धांत:

असंवेदनशीलता सिद्धांत यह मानता है कि मीडिया हिंसा के बार-बार संपर्क में आने से व्यक्ति की वास्तविक दुनिया की हिंसा के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया धीरे-धीरे कम हो जाती है, जिससे पीड़ितों के लिए चिंताजनक उत्तेजना, घृणा और सहानुभूति में कमी आती है। यह प्रक्रिया आक्रामक व्यवहार के खिलाफ "अंतर्निहित ब्रेक" को प्रभावी ढंग से हटा सकती है और समाज-समर्थक, सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रियाओं को कम कर सकती है। अध्ययनों ने लगातार दिखाया है कि हिंसक मीडिया के लंबे समय तक संपर्क से व्यक्ति वास्तविक दुनिया की हिंसा के प्रति कम संवेदनशील हो जाते हैं, जिससे समाज में सहानुभूति और सहयोग की भावना कम हो सकती है और आक्रामकता बढ़ सकती है।

4. अपराध दरों पर ओटीटी सिनेमा का प्रभाव: डेटा और विश्लेषण:

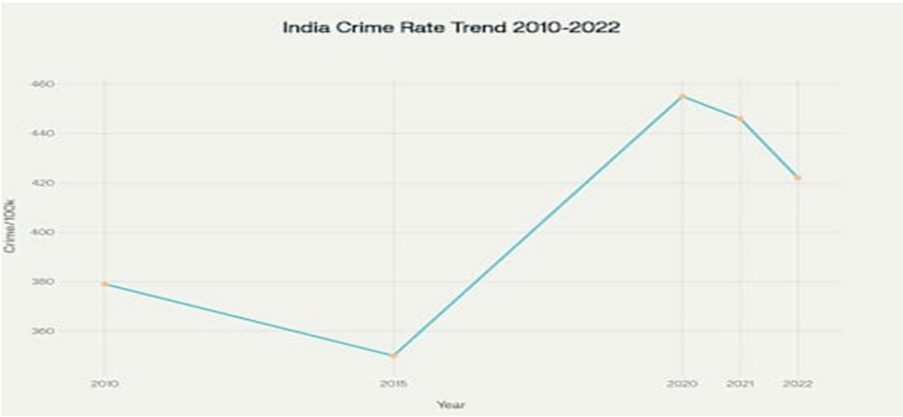

Trend of Overall Crime Rate in India (per 100,000 population) from 2010 to 2022 based on NCRB data

4.1 एनसीआरबी डेटा और अपराध दरों में प्रवृत्तियां:

भारतीय अपराध दरों में रुझान गृह मंत्रालय के तहत काम करने वाली एजेंसी राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो एनसीआरबी) भारत में अपराध डेटा) के लिए प्राथमिक और आधिकारिक स्रोत के रूप में कार्य

करती है। एनसीआरबी सालाना व्यापक सांख्यिकीय रिपोर्ट प्रकाशित करता है,जिसके आंकड़े निम्नलिखित हैं-

तालिका 1: भारत में प्रति 1 लाख जनसंख्या पर अपराध दर *(2010-2021)*

वर्ष	प्रति 1 लाख जनसंख्या पर अपराध दर
2010	3.74
2011	3.79
2012	3.73
2013	3.55
2014	3.62
2015	3.35
2016	3.16
2017	3.03
2018	2.99
2019	2.93
2020	2.91
2021	2.94

***स्रोत:** – *राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) डेटा पर आधारित*

***टिप्पणी:** इस तालिका में दी गई दरें *प्रति 1 लाख जनसंख्या* पर अपराधों की संख्या को दर्शाती हैं, जिससे समयानुसार अपराध के स्तर की प्रवृत्ति समझने में मदद मिलती है।

वर्षवार अपराध आंकड़े (हिंदी में)

अपराध श्रेणी	2019	2020	2021	2022
पति या रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता *(आईपीसी 498ए)*	1,24,934	1,11,549	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं

अपराध श्रेणी	2019	2020	2021	2022
दहेज उत्पीड़न *(दहेज निषेध अधिनियम)*	13,307	10,366	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं
दहेज मृत्यु *(आईपीसी 304बी)*	7,141	6,966	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं
घरेलू हिंसा *(घरेलू हिंसा अधिनियम)*	553	446	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं
साइबर अपराध	27,248 *(2018)*	उपलब्ध नहीं	52,974	65,893
आर्थिक अपराध	उपलब्ध नहीं	उपलब्ध नहीं	1,74,013	1,93,385
महिलाओं के विरुद्ध अपराध (कुल)	4,05,326	3,71,503	4,45,256	उपलब्ध नहीं

स्रोतएनसीआरबी रिपोर्ट नोट: उपलब्ध कराए गए स्रोतों में डेटा की उपलब्धता विशिष्ट अपराध श्रेणी : और वर्ष केअनुसार भिन्न होती है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के आंकड़ों का अनुभवजन्य विश्लेषण से पता चलता है कि ओटीटी विकास की अवधि के दौरान भारत में कुल अपराध दर में आम तौर पर गिरावट आई है, साइबर अपराध जैसी विशिष्ट श्रेणियों में उछाल आया है।

वर्ष 2010 से 2022 तक भारत की कुल अपराध दर (प्रति 100,000 जनसंख्या) के रुझान को देखा जाए तो, एक स्पष्ट गिरावट का पैटर्न दिखाई देता है। यह रेखा चार्ट (NCRB डेटा पर आधारित) बताता है कि भारत में अपराध दर 2010 के आसपास अपने चरम पर थी, जिसके बाद इसमें लगातार गिरावट आई है। वर्ष 2020-2022 के दौरान, भले ही ओटीटी प्लेटफॉर्म का उपभोग तेजी से बढ़ा है, लेकिन अपराध दर में कोई बड़ा उछाल नहीं देखा गया है। इसके बजाय, अपराध दर में मामूली उतार-चढ़ाव के साथ स्थिर गिरावट का रुझान बना हुआ है।

इस डेटा से यह स्पष्ट होता है कि ओटीटी सामग्री के बढ़ते प्रभाव और अपराध दर के बीच कोई सीधा सकारात्मक संबंध नहीं है। हालांकि, इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि साइबर अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी और डिजिटल अपराधों में वृद्धि हुई है, जो डिजिटल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग से जुड़ी है। इसके अलावा, कुछ मामलों में, ओटीटी सामग्री से प्रेरित अपराधों की घटनाओं की खबरें भी सामने आई हैं, लेकिन ये घटनाएं अपवाद स्वरूप हैं और समग्र अपराध दर को प्रभावित नहीं करती हैं।

4.2 मीडिया से प्रेरित अपराध के उदाहरण:

भारत और विदेशों में मीडिया से प्रेरित अपराध के कई उदाहरण सामने आए हैं। कुछ मामलों में, अपराधियों ने सीधे तौर पर ओटीटी शो या फिल्मों में दिखाए गए तरीकों को अपनाया है। उदाहरण के लिए, कुछ मामलों में युवाओं ने अपराध करने के बाद अपराधियों के रूप में वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है, जिसमें उन्होंने ओटीटी शो के पात्रों की नकल की है। ये मामले मीडिया के प्रभाव की चेतावनी देते हैं, विशेष रूप से उन युवाओं के लिए जो अपराधियों को रोल मॉडल के रूप में देखते हैं।

कुछ उल्लेखनीय मामलों में शामिल हैं:

• दिल्ली के एक खौफनाक मामले में, अपने साथी की हत्या करने और उसके शरीर के टुकड़े करने के आरोपी एक व्यक्ति ने कथित तौर पर पुलिस को बताया कि वह अमेरिकी वेब सीरीज "डेक्सटर" से प्रेरित था।

• उत्तर प्रदेश के एक युवक ने, जिस पर वह आसक्त था, एक महिला को गोली मार दी, उसने दावा किया कि वह लोकप्रिय वेब सीरीज "मिर्जापुर" के एक चरित्र से प्रभावित था।

• एक अन्य घटना में, उत्तर प्रदेश के युवकों के एक समूह ने जबरन वसूली की साजिश रची, जिन्होंने पुलिस के सामने स्वीकार किया कि उन्हें यह विचार एक अपराध-थीम वाली वेब सीरीज से मिला था।

• अखिल भारतीय ब्लॉकबस्टर "केजीएफ 2" को कर्नाटक के एक 19 वर्षीय व्यक्ति द्वारा प्रेरणा के रूप में उद्धृत किया गया था, जिसने फिल्म के नायक की तरह कुख्यात बनने की इच्छा से चार सुरक्षा गार्डों की हत्या कर दी थी। मीडिया में व्यापक रूप से रिपोर्ट की गई इन घटनाओं ने एक कहानी को हवा दी है कि ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपराध का ग्राफिक और अक्सर महिमामंडित चित्रण सीधे तौर पर आपराधिक व्यवहार में वृद्धि में योगदान दे रहा है, खासकर युवाओं में।

व्यापक वास्तविकता: डेटा क्या दर्शाता है हालांकि, एनसीआरबी की 2019 से 2022 तक की वार्षिक "भारत में अपराध" रिपोर्ट की बारीकी से जांच ओटीटी सामग्री द्वारा प्रेरित अपराध की लहर के निष्कर्ष का समर्थन नहीं करती है। कुल संज्ञेय अपराधों और प्रति लाख जनसंख्या पर अपराध दर के आंकड़े अधिक जटिल प्रवृत्ति प्रस्तुत करते हैं। अपराध के मुख्य कारण व्यापक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक हैं।

हालांकि, इन मामलों की संख्या बहुत कम है और ये समग्र अपराध दर को प्रभावित नहीं करते हैं। पुलिस और न्यायालयों ने भी इस बात पर जोर दिया है कि मीडिया से प्रेरित अपराध अभी भी अपवाद हैं और समाज में अपराध के मुख्य कारण व्यापक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक हैं।

4.3 आपराधिक न्याय प्रणाली की सार्वजनिक धारणा पर प्रभाव:

ओटीटी चित्रण का आपराधिक न्याय प्रणाली की धारणा पर भी प्रभाव पड़ा है। कई ओटीटी शो और वेब सीरीज में पुलिस, न्यायालय और कानूनी प्रक्रियाओं को यथार्थवादी तरीके से दिखाया जाता है, जिससे जनता की आपराधिक न्याय प्रणाली के प्रति धारणा प्रभावित होती है। कुछ मामलों में, ये चित्रण पुलिस और न्यायालय के प्रति विश्वास को बढ़ाते हैं, जबकि कुछ मामलों में ये सिस्टम की कमियों और भ्रष्टाचार को उजागर करते हैं, जिससे जनता में अविश्वास पैदा हो सकता है।

सार्वजनिक जागरूकता पर कानूनी नाटकों का सकारात्मक प्रभाव भी देखा गया है। कई ओटीटी शो में सामाजिक मुद्दों, अपराध की रोकथाम और कानूनी प्रक्रियाओं को समझाने का प्रयास किया जाता है,

जिससे दर्शकों को अपराध और कानून के बारे में जागरूकता बढ़ती है। इस तरह, ओटीटी सामग्री का समाज पर दोहरा प्रभाव है–एक तरफ यह अपराध और हिंसा के प्रति संवेदनहीनता बढ़ा सकती है, दूसरी तरफ यह सामाजिक जागरूकता और कानूनी ज्ञान को भी बढ़ा सकती है।

5. नियामक प्रयास और नैतिक दुविधाएं:

5.1 आईटी नियम 2021 और अन्य नियामक ढांचे:

भारत सरकार ने ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सामग्री के नियमन के लिए आईटी नियम 2021 लागू किया है। इन नियमों का उद्देश्य सामग्री मॉडरेशन, रचनात्मक स्वतंत्रता और नियमन के बीच संतुलन बनाना है। ये नियम ओटीटी प्लेटफॉर्म को सामग्री के वर्गीकरण, आयु-उपयुक्त चेतावनी और शिकायत निवारण तंत्र प्रदान करने के लिए बाध्य करते हैं।

हालांकि, इन नियमों की प्रभावशीलता पर बहस जारी है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि ये नियम रचनात्मक स्वतंत्रता को सीमित कर सकते हैं, जबकि अन्य का कहना है कि ये नियम समाज, विशेषकर युवाओं और बच्चों को हानिकारक सामग्री से बचाने के लिए आवश्यक हैं।

5.2 सामग्री मॉडरेशन और रचनात्मक स्वतंत्रता:

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सामग्री मॉडरेशन एक महत्वपूर्ण नैतिक दुविधा है। एक तरफ, रचनात्मक स्वतंत्रता कलाकारों और निर्माताओं को नए और चुनौतीपूर्ण विषयों पर काम करने की अनुमति देती है। दूसरी तरफ, सामग्री मॉडरेशन समाज, विशेषकर युवाओं और बच्चों को हानिकारक सामग्री से बचाने के लिए आवश्यक है1।

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सामग्री मॉडरेशन का मुख्य तरीका आत्म-नियमन है। अधिकांश प्लेटफॉर्म अपने स्वयं के दिशा-निर्देशों और समीक्षा तंत्र का पालन करते हैं, लेकिन इनकी प्रभावशीलता पर सवाल उठाए जाते हैं। कुछ मामलों में, सामग्री को हटाने या संशोधित करने के लिए सरकार या नागरिक समाज के दबाव का सामना करना पड़ता है।

5.3 भारतीय समाज में मीडिया साक्षरता की आवश्यकता:

ओटीटी सामग्री के प्रभाव को कम करने और समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाने के लिए मीडिया साक्षरता की आवश्यकता है। युवाओं और माता-पिता के लिए जागरूकता कार्यक्रम, स्कूल और कॉलेजों में मीडिया शिक्षा और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मीडिया की भूमिका को बढ़ावा देना आवश्यक है।

मीडिया साक्षरता से दर्शकों को यह समझने में मदद मिलती है कि काल्पनिक सामग्री और वास्तविक जीवन में अंतर है। यह उन्हें मीडिया में दिखाए गए व्यवहारों की नकल करने से रोकने में मदद कर सकता है और समाज में सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा दे सकता है।

6. निष्कर्ष और सिफारिशें:

6.1 प्रमुख निष्कर्ष:

- **ओटीटी सिनेमा का समाज पर प्रभाव:** ओटीटी सामग्री, विशेष रूप से अपराध थ्रिलर, समाज में अपराध और हिंसा के प्रति धारणाओं, दृष्टिकोणों और व्यवहारों को प्रभावित कर सकती है। हालांकि, समग्र अपराध दर पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव सीमित है।
- **मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत:** सामाजिक अधिगम, संवर्धन और असंवेदनशीलता सिद्धांतों के अनुसार, मीडिया सामग्री का लंबे समय तक और भारी संपर्क दर्शकों की धारणाओं और व्यवहारों को आकार दे सकता है।
- **सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक:** अपराध के मुख्य निर्धारक व्यापक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक हैं, न कि केवल मीडिया सामग्री।
- **साइबर अपराध में वृद्धि:** ओटीटी और डिजिटल मीडिया के बढ़ते उपयोग से साइबर अपराध और ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसे अपराधों में वृद्धि हुई है।
- **आपराधिक न्याय प्रणाली की धारणा:** ओटीटी चित्रण का आपराधिक न्याय प्रणाली की धारणा पर भी प्रभाव पड़ा है, जिससे जनता में जागरूकता और अविश्वास दोनों बढ़ सकते हैं।

6.2 सिफारिशें:

- **नियामक सुधार:** ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सामग्री मॉडरेशन को मजबूत करने के लिए सरकार और नियामक संस्थाओं को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
- **सामग्री मॉडरेशन:** प्लेटफॉर्म को आत्म-नियमन के साथ-साथ सामग्री की गुणवत्ता और उपयुक्तता पर ध्यान देना चाहिए।
- **मीडिया साक्षरता:** युवाओं और माता-पिता के लिए मीडिया साक्षरता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे वे मीडिया सामग्री को समझ सकें और इसके प्रभावों से बच सकें।
- **समाज और परिवार की भूमिका:** समाज और परिवार को युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन करना चाहिए और उन्हें मीडिया सामग्री के प्रभावों से अवगत कराना चाहिए।

भविष्य के शोध के लिए सुझाव: भविष्य में, ओटीटी सामग्री और अपराध दरों के बीच संबंधों पर और अधिक अनुभवजन्य शोध किए जाने की आवश्यकता है, ताकि इस जटिल संबंध को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

NCRB डेटा और चार्ट पर विस्तृत चर्चा:

भारत में अपराध दरों के रुझान को समझने के लिए राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) का डेटा सबसे विश्वसनीय स्रोत है। NCRB की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2010 से 2022 तक प्रति 100,000 जनसंख्या पर अपराध दर में एक स्पष्ट गिरावट देखी गई है। यह रेखा चार्ट (NCRB डेटा पर आधारित) दिखाता है कि भारत में अपराध दर 2010 के आसपास अपने चरम पर थी, जिसके बाद इसमें लगातार गिरावट आई है। वर्ष 2020-2022 के दौरान, जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का उपभोग तेजी से बढ़ा, अपराध दर में कोई बड़ा उछाल नहीं देखा गया। इसके बजाय, अपराध दर में मामूली उतार-चढ़ाव के साथ स्थिर गिरावट का रुझान बना हुआ है।

इस डेटा से यह स्पष्ट होता है कि ओटीटी सामग्री के बढ़ते प्रभाव और अपराध दर के बीच कोई सीधा सकारात्मक संबंध नहीं है। हालांकि, इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि साइबर अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी और डिजिटल अपराधों में वृद्धि हुई है, जो डिजिटल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते

उपयोग से जुड़ी है। इसके अलावा, कुछ मामलों में, ओटीटी सामग्री से प्रेरित अपराधों की घटनाओं की खबरें भी सामने आई हैं, लेकिन ये घटनाएं अपवाद स्वरूप हैं और समग्र अपराध दर को प्रभावित नहीं करती हैं।

इस प्रकार, NCRB डेटा और चार्ट से यह स्पष्ट होता है कि भारत में अपराध दर में स्थिर गिरावट जारी है और ओटीटी सिनेमा का इस पर कोई सीधा नकारात्मक प्रभाव नहीं है। हालांकि, साइबर अपराध और डिजिटल अपराधों में वृद्धि एक चिंता का विषय है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

अपराध और सामाजिक प्रभाव पर विस्तृत चर्चा:

भारतीय समाज में अपराध और हिंसा के प्रति धारणाएं और दृष्टिकोण कई कारकों से प्रभावित होते हैं। मीडिया, विशेष रूप से ओटीटी सिनेमा, इन धारणाओं को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, मीडिया सामग्री का प्रभाव सीमित है और यह समाज में अपराध के मुख्य कारण नहीं है।

अपराध के मुख्य कारण व्यापक सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक हैं। गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा की कमी, सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था की कमजोरियां अपराध को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारक हैं। इन कारकों के अलावा, परिवार और समाज की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। युवाओं को सही दिशा में मार्गदर्शन देने और उन्हें सकारात्मक मूल्यों से जोड़ने से अपराध की रोकथाम में मदद मिल सकती है।

ओटीटी सिनेमा का प्रभाव अपराध के प्रति धारणाओं, दृष्टिकोणों और व्यवहारों को प्रभावित कर सकता है, लेकिन यह समग्र अपराध दर को प्रभावित नहीं करता है। अपराध की रोकथाम और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें मीडिया साक्षरता, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक न्याय और कानून-व्यवस्था सभी शामिल हैं।

अंतिम विचार:

भारतीय ओटीटी सिनेमा ने मनोरंजन के परिदृश्य में एक नया युग शुरू किया है। इसने दर्शकों को विविध और प्रयोगात्मक सामग्री प्रदान की है, लेकिन साथ ही इसने समाज में अपराध और हिंसा के

प्रति धारणाओं को भी प्रभावित किया है। हालांकि, NCRB डेटा और चार्ट से यह स्पष्ट है कि ओटीटी सिनेमा का समग्र अपराध दर पर कोई सीधा प्रभाव नहीं है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि विभिन्न OTT प्लेटफ़ॉर्म पर क्राइम थ्रिलर की डार्क और गंभीर कहानियों ने लोगों की कल्पना को आकर्षित किया है। हालाँकि, कुछ उदाहरणों में, उन्हें वास्तविक जीवन के अपराधों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में भी उद्धृत किया गया है।

समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए, मीडिया साक्षरता, शिक्षा, रोजगार और सामाजिक न्याय पर ध्यान देना आवश्यक है। ओटीटी प्लेटफॉर्म को भी अपनी सामग्री की गुणवत्ता और उपयुक्तता पर ध्यान देना चाहिए, ताकि समाज, विशेषकर युवाओं और बच्चों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े।

निष्कर्ष:-

सामाजिक अपराध दरों पर भारतीय ओटीटी सिनेमा का प्रभाव जटिल और सूक्ष्म है, जो सरलीकृत कारण संबंधी व्याख्याओं को धता बताता है। जबकि ओटीटी सामग्री, विशेष रूप से अपराध थ्रिलर की इमर्सिव व्यक्तिगत प्रकृति में धारणाओं, दृष्टिकोणों और यहां तक कि व्यवहारों को आकार देने की क्षमता रखती है । विशेष रूप से प्रभावशाली युवाओं के बीच - अनुभवजन्य डेटा ओटीटी की बढ़ती खपत और बढ़ती अपराध दरों के बीच सीधे संबंध का समर्थन नहीं करता है। इसके बजाय, डिजिटल अपराधों में वृद्धि के साथ-साथ समग्र अपराध में देखी गई गिरावट, डिजिटल युग में आपराधिक गतिविधि की बदलती प्रकृति को उजागर करती है।

विश्लेषण से सनसनीखेज आपराधिक मामलों द्वारा आकार दिए गए सार्वजनिक धारणा और व्यापक सांख्यिकीय वास्तविकता के बीच एक महत्वपूर्ण वियोग का पता चलता है। जबकि ओटीटी सामग्री सहित मीडिया के व्यक्तिगत व्यवहार पर प्रभाव को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता है, और विशिष्ट उदाहरण वास्तव में चिंताजनक हैं, वे आदर्श के बजाय अपवाद प्रतीत होते हैं।

राष्ट्रीय अपराध डेटा, 2020 की विसंगति के बावजूद, उपलब्ध आंकड़ों के सबसे हाल के वर्ष में समग्र अपराध दर में कमी की ओर रुझान दर्शाता है। इससे पता चलता है कि जिम्मेदार सामग्री निर्माण और

मीडिया साक्षरता की आवश्यकता है, लेकिन यह दावा कि ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म भारत में अपराध में वृद्धि के प्राथमिक चालक हैं, उपलब्ध साक्ष्यों से पुष्ट नहीं होता है। अपराध दर को प्रभावित करने वाले कारक बहुआयामी और जटिल हैं, जिनमें सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ, पुलिस की प्रभावशीलता और विधायी परिवर्तन आदि शामिल हैं। इसलिए, अपराध के मूल कारण के रूप में ओटीटी सामग्री पर एकल ध्यान केंद्रित करना एक बहुत बड़े और अधिक सूक्ष्म मुद्दे की एक सरलीकृत और भ्रामक व्याख्या होगी।

अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि मीडिया के प्रभावों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गतिशीलता के व्यापक संदर्भ में समझा जाना चाहिए, जो अपराध के प्राथमिक चालक बने हुए हैं। आईटी नियम 2021 जैसे नियामक ढांचे रचनात्मक स्वतंत्रता को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ संतुलित करने के चल रहे प्रयासों को दर्शाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ओटीटी प्लेटफॉर्म सार्वजनिक चर्चा और जागरूकता में सकारात्मक योगदान दें। अंततः, जबकि ओटीटी सिनेमा दर्शकों को अपराध और न्याय के मुद्दों के प्रति संवेदनशील और असंवेदनशील बना सकता है, इसका सामाजिक प्रभाव उन कारकों के समूह द्वारा प्रभावित होता है जो स्क्रीन से कहीं आगे तक फैले होते हैं।

संदर्भ ग्रथ सूची:

- Researchgate.net. (n.d.). *Psychoanalysis of the Thematic Concerns on OTT in India*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/362591873_Psychoanalysis_of_the_Thematic_Concerns_on_OTT_in_India
- Timesofindia.indiatimes.com. (n.d.). *Authentic impactful true crime shows a hit on OTT*. Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/authentic-impactful-true-crime-shows-a-hit-on-ott/articleshow/95618113.cms

- Researchgate.net. (n.d.). *Emergence of thrillers as a major genre in the Indian OTT space: A critical analysis*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/349097014_Emergence_of_thrillers_as_a_major_genre_in_the_Indian_OTT_space_A_critical_analysis
- Ojp.gov. (n.d.). *Effects of Media Violence Exposure on Criminal Aggression: A Meta-Analysis*. Retrieved from https://ojp.gov/ncjrs/virtual-library/abstracts/effects-media-violence-exposure-criminal-aggression-meta-analysis
- Researchgate.net. (n.d.). *The Dark Side of Connectivity: Examining the Role of Social Media in Rising Crime Rates in India*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/390303557_The_Dark_Side_of_Connectivity_Examining_the_Role_of_Social_Media_in_Rising_Crime_Rates_in_India_ARTICLE_INFO_ABSTRACT
- Pmc.ncbi.nlm.nih.gov. (n.d.). *Desensitization to Media Violence: Links With Habitual Media Violence Exposure, Aggressive Cognitions, and Aggressive Behavior*. Retrieved from https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC4522002/
- Researchgate.net. (n.d.). *The Dark Side of Connectivity: Examining the Role of Social Media in Rising Crime Rates in India*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/390303557_The_Dark_Side_of_Connectivity_Examining_the_Role_of_Social_Media_in_Rising_Crime_Rates_in_India_ARTICLE_INFO_ABSTRACT
- Researchgate.net. (n.d.). *An Empirical Study on Indian Crime Web Series and Its Effects*. Retrieved from https://www.researchgate.net/profile/Rashmi-Cp-

3/publication/377663652_An_Empirical_Study_on_Indian_Crime_Web_Series_and_Its_Effects/links/65b1e2368c1a4a6d1d1e59be/An-Empirical-Study-on-Indian-Crime-Web-Series-and-Its-Effects.pdf

- Data.gov.in. (n.d.). *National Crime Records Bureau (NCRB)*. Retrieved from https://www.data.gov.in/ministrydepartment/National%20Crime%20Records%20Bureau%20(NCRB
- Ijcrt.org. (n.d.). *CONTENT ANALYSIS OF INDIAN SHOWS ON OTT PLATFORMS: A PSYCHOLOGICAL PERSPECTIVE*. Retrieved from https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT24A4671.pdf
- Researchgate.net. (n.d.). *The Dark Side of Connectivity: Examining the Role of Social Media in Rising Crime Rates in India*. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/390303557_The_Dark_Side_of_Connectivity_Examining_the_Role_of_Social_Media_in_Rising_Crime_Rates_in_India_ARTICLE_INFO_ABSTRACT
- Indiatoday.in. (n.d.). *Killer Soup: How a 2017 murder case inspired Konkona Sensharma, Manoj Bajpayee's Netflix show*. Retrieved from https://www.indiatoday.in/entertainment/ott/story/real-story-inspired-konkona-sensharma-manoj-bajpayee-killer-soup-2488230-2024-01-13
- Ijcrt.org. (n.d.). *EFFECTS OF CRIME REALITY SHOWS ON INDIAN VIEWERS - A STUDY*. Retrieved from https://ijcrt.org/papers/IJCRT1801229.pdf

- Nalsar.ac.in. (n.d.). *The Need for Regulation: Balancing Creative Freedom and Accountability on OTT Platforms in India*. Retrieved from https://nalsar.ac.in/images/NLR_Vol%208_No-2.pdf
- Reflections.live. (n.d.). *Censorship Laws for Social Media and OTT Platforms in India: Balancing Public Morality and Digital Rights*. Retrieved from https://reflections.live/articles/20615/censorship-laws-for-social-media-and-ott-platforms-in-india-balancing-public-morality-and-digital-rights-article-by-kayanath-parveen-20924-m878h1uf.html
- Study IQ. (n.d.). Crime rate in India: What is the current crime rate? Study IQ. Retrieved from https://www.studyiq.com/articles/crime-rate-in-india/